शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

काव्य में ग्रामीण जीवन

डॉ.जगदीश चौहान
शासकीय हाई स्कूल
मनावर (धार) मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

काव्य की मूल आत्मा गांव में निवास करती है। दूसरे शब्दों में काव्य का जन्म ही गांव में हुआ है। काव्य का सृजन ग्राम्य-जीवन की ही देन है। जिन भावों को काव्य में सन्निहित और समाहित किया जाता है, वे भाव गांवों में सर्वत्र व्याप्त है। प्राकृतिक सुषमा , करुणा, मानव मूल्य, सहजता, सहानुभूति, त्याग, श्रम आदि अनेक मानवीय और प्राकृतिक गुण ग्राम्य जीवन में रचे-बसे हैं। इसका प्रमाण आदि कवि श्री वाल्मीकि जी द्वारा रचित इस स्रष्टि का प्रथम महाकाव्य रामायण है। जब वाल्मीकि जी नदी में स्नान कर रहे थे तब एक बहेलिये ने क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक को अपने बाण का निशाना बना लिया और दूसरा पक्षी उसके वियोग में तड़प कर मर गया। उसके इस वियोग को देखकर वाल्मीकि जी के हृदय में करुणा उत्पन्न हुई और वे उस क्रौंच पक्षी के प्रति दया और बहेलिये के प्रति क्रोध की भावना से युक्त हो गए। उनके मुख से स्वतः ही यह श्लोक निःसृत हुआ:

मा! निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
य क्रौंच मिथुनादेकमवधीः काम मोहिताम्।।1

यही श्लोक लौकिक स्रष्टि की प्रथम काव्य रचना का सूत्रपात करता है। तत्पश्चात् वाल्मीकि जी ने करुणापूर्ण होकर स्रष्टि के प्रथम महाकाव्य रामायण का सृजन किया। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण जीवन में काव्य पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

काव्य और ग्रामीण जीवन का पारस्परिक संबंध अनादिकाल से चला आ रहा है। ग्रामीण जीवन के सुख-दुःख का चित्रण काव्य में मिलता है। संभवतः इसी सुख-दुःख को अनुभूत करने के लिए भगवान श्री राम ने अपने पिता द्वारा दिए जाने वाले राज सिंहासन को त्याग दिया और माता कैकेयी के वरदान को आधार बनाकर वन चले गए। साथ ही उस ग्राम्य जीवन को रावण के भयातंक से मुक्ति देने के लिए वन गए। वहां ग्राम्य जीवन व्यतीत करने वाले लोगों से संपर्क प्राप्त करके उनके सुख-दुःख को प्रत्यक्ष रूप से देख सके। ऋषि-मुनियों के दर्शन तथा सत्संग लाभ लेने हेतु बड़ी प्रसन्नता से 14 साल का वनवास स्वीकार कर लिया।

इसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण भी ग्राम्य जीवन के सुख-दुःख का अनुभव करना चाहते थे। यद्यपि वे जन्म तो मथुरा नगरी में कंस के कारगार में लेते हैं, लेकिन वहां से वे नंदगांव पहुंच जाते हैं। वहां विभिन्न लीलाओं के माध्यम से ग्रामीण जीवन के सुखों का स्वयं उपभोग करते ही हैं, पूरे ब्रजवासियों को भी सुख प्रदान करते हैं। गोचारण के लिए माता यशोदा से श्रीकृष्ण हठ भी करते हैं:

आजु मैं गाइ चरावन जैहों।
वृंदावन के भांति-भांति फल अपने कर में खैहों।2

मां का ऐसा वात्सल्य ग्राम्य जीवन में ही मिल सकता है, जो अपने पुत्र के लिए इतनी चिंतित रहती है, जितनी माता यशोदा अपने कन्हैया के लिए होती है:

प्रात जात लै चारण घर आवत हे सांझ।
तुम्हरौ कमल बदन कुम्हिलैहें रेंगति घामहि मांझ।3

जिस ग्रामीण जीवन का चित्रण वेदव्यास जी ने श्रीमद्भागतव पुराण में किया है , वह यह सिद्ध करता है कि संस्कृत काव्य में भी ग्राम्य जीवन के सुंदर चित्र उपस्थित हैं।

रामायण और महाभारतकाल में शिक्षा केंद्र वन में ही हुआ करते थे , जहां सभी विद्यार्थी शांत वातावरण में विद्याध्ययन के साथ-साथ कृषि कर्म भी सीखते थे। ग्रामीण जीवन एवं कृषक जीवन के सारे ढंग सिखाये जाते थे , ताकि विद्यार्थी जीवन में स्वावलंबी आत्मनिर्भर बनें। तत्कालीन समय में राजकुमार हो या सामान्य वर्ग के बालक, सभी को एक साथ विद्याध्ययन करना होता था। यह व्यवस्था इसलिए थी कि कालांतर में इन्हीं में से कुछ राजकुमार राजा के पद पर अभिषिक्त होते थे। यदि इन्हें सामान्य जनता के दुःख का ज्ञान नहीं होता तो ये सभी के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार कैसे कर पाएंगे।

भगवान श्रीराम अपने सहपाठी निषादराज गुह के प्रति जैसी मैत्री का निर्वाह करते हैं, वह निश्चित रूप से एक आदर्श ही है। साथ ही ग्रामीण अंचल में रहने वाले निषाद राज गुह का सौहार्द्र , प्रेम और निःस्वार्थ सेवा का व्यवहार भी सभी को प्रभावित करता है।

महाकवि तुलसीदास जी ने गांव के रहने वाले केवट की उदारता और भोलेपन का बहुत सुंदर चित्रण किया है। जब भगवान श्रीराम लक्ष्मण और सीताजी के साथ गंगाजी से पार उतारने की बात कहते हैं तो वह कहता है कि मैं आपके पैरों की रज के प्रभाव को जानता हूं। पहले आप मुझे अपने चरण गंगाजल से धोने दीजिए और फिर मैं उस जल का आचमन परिवार सहित करूंगा। यदि उससे मुझे और मेरे परिवार को कुछ नहीं होगा तो ही मैं आपको अपनी नाव में बैठने दूंगा। आपके इन चरणों की रज के प्रभाव से एक पत्थर की शिला नारी बन गई थी। यदि मेरी नाव भी नारी बन गई तो मेरे परिवार की आजीविका कैसे चलेगी :

रावरे दोषुन पायन को पगधूरि को भूरि प्रभाउ महा है
पहन तें बन-बाहनु काठ को कोमल है जलु खाइ रहा है।4

महाकवि तुलसीदास जी भी उस केवट की भाग्य की सराहना करते हैं। साथ ही देवगण भी जयकार करके सुमन बरसाते हैं:

तुलसी सराहैं ताको भागु सानुराग सुर
ब्रषैं सुमन जय-जय कहैं टेरि-टेरि।5

जिस केवट ने अपने भोलेपन से भगवान श्रीराम के चरणामृत का पान किया वह निश्चित रूप से प्रशंसनीय है। देवता भी उसके भाग्य की सराहना करते हुए जय-जयकार करते हैं।

महाकवि तुलसीदास जी ने अपनी रचना कवितावली में भी ग्राम्य जीवन और उसकी संस्कृति का चित्रण किया है। जब भगवान श्रीराम वनवास जाते हुए एक गांव से गुजरते हैं और सीताजी को प्यास लगती है तब गांव के कुंए पर वे तीनों पानी पीते हैं। उस समय सीताजी ग्राम की नारियों के बीच बैठ जाती हैं। नारी सुलभ स्वभाव तथा जिज्ञासा के वशीभूत होकर वे गांव की महिलाएं सीताजी से श्रीराम और लक्ष्मण जी के संबंध में प्रश्न करती हैं कि वे दोनों कौन हैं ग्रामीण महिलाओं के प्रश्न करने का ढंग जितना

निराला था उतना ही सुंदर उत्तर सीताजी ने दिया:

सादर बारहिं बार सुभाय
चितै तुम त्यों हमरो मन मोहै।
पूछति ग्रामवधू सिय सौं
कहौ सांवरे से सखि रावरे को है
सुनि सुंदर बैन सुधारस साने
सयानी है जानकी जानी भली।
तिरछे करि नेन दै सैन तिन्है
समुझाइ कछू मुसुकाई चली।।6

ग्राम्य जीवन ग्राम्य संस्कृति और नारी सुलभ स्वभाव का जीवंत चित्रण अन्यत्र दुर्लभ है।

इसी प्रकार महाकवि सूर ने भी ग्रामीण जीवन व ग्राम्य नारियों का सुंदर चित्रण किया है। यद्यपि गोपियां पढ़ी-लिखी नहीं हैं। साथ ही शहरी या नगरीय नारियों जैसी चतुराई भी उनमें नहीं है, फिर भी सूरदासजी उनकी चतुराई का चित्रण उनके भोलेपन में ही समाविष्ट कर देते हैं। जब उद्धवजी उन्हें ज्ञानोपदेश और योग-साधना की शिक्षा देने आते हैं तब उनके द्वारा दिए जाने वाले तर्कों को सुनकर और पढ़कर आश्चर्य होता है:

उधौ मन न भए दस बीस
एक हुतौ जो गया स्याम संग, को आराधे ईस।।7

और वे उद्धव जी से कहती हैं कि योग एक ही शर्त पर कर सकती हैं:

उधौ तो हम जोग करैं
जो हरि बेगि मिलें अब हमकों वैसे वेष धरें।।8

उद्धव जी गोपियों की यह बात सुनकर चक्कर में पड़ जाते हैं। उनकी बुद्धि कुंद हो जाती है।

निर्गुन कौन देस को बासी
मधुकर! ह सि समुझाय सौंह दै बूझति सांच न हांसी।।
को है जनक जननि को कहियत को नारि को दासी
सुनत मौन ह्यै रह्यो ठग्यो सो सूर सबै मति नासी।9

निश्चित रूप से ग्राम में रहने वाली ये गोपियां प्रेम के जिस सागर में डूबी थीं , उसमें उद्धव जी का ज्ञान कहीं भी ठहर नहीं पाया। महाकवि सूर ने ग्राम्य जीवन में व्याप्त प्रेम का उसके प्रति निष्ठा का अद्भुत और अप्रतिम चित्रण किया है।

इसी प्रकार आधुनिककाल के कवि जगन्नाथ दास रत्नाकर ने भी अपनी रचना उद्धव-शतक में गोपियों के माध्यम से ग्राम्य जीवन की जो झांकी प्रस्तुत की है वह अद्भुत है। जब उद्धव जी ब्रज की गोपियों को ज्ञान व योग की शिक्षा देने आते हैं तब गोपियां कहती हैं:

आए हौ सिखावन कौ जोग मथुरा तै तो पै
ऊधौ ये नियोग के वचन बतरावौ ना।10

गोपियां बड़ी चतुराई से योग का अर्थ जोड़ या मिलन से करके उद्धव जी से कहती हैं कि यदि तुम योग सिखाने आये हो तो वियोग की बातें मत कहो।

काव्य में ग्राम्य जीवन का चित्रण केवल पौराणिक काल में ही नहीं अपितु अनवरत होता रहा है। आधुनिक काल की कविताओं में भी ग्राम्य जीवन तथा कृषि के साथ कृषकों की कथा-व्यथा का चित्रण भी यत्र-तत्र मिलता है। मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी 'मातृभूमि' कविता में कृषि की महत्ता का चित्रण किया है:

हे मातृभूमि! उपजें न जो तुझसे कृषि-अंकुर कभी
तो तड़प-तड़प कर जल मरें जठरानल में हम सभी।11

जैस कवि रहीम ने 'बिन पानी सब सून कहा है ठीक ऐसे ही गुप्त जी ने उक्त पंक्तियों में यह भाव व्यक्त किया है कि यदि धरती में अनाज

E ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2016

उत्पन्न न करें तो मानव मात्र तड़प-तड़प कर मर जाएगा। अर्थात् उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

एक अन्य कविता में गुप्त जी ने कृषि का चित्रण किया है। कृषि-भूमि केवल किसान की ही नहीं समस्त मानव जाति की रीढ़ और प्राण है। उसके अस्तित्व से ही मानव का अस्तित्व शेष है। गुप्तजी प्रस्तुत कविता में खेत की अभिलाषा करते हैं:

रहते हम यों जीवित-मृत क्यों! ज्यों मरघट के भूत-प्रेत।
कहीं हमारा भी होता था! छोटा-मोटा एक खेत।12

वर्तमान में जनसंख्या बढ़ने और विकास के नाम पर कृषि भूमि के घटते रकबे की ओर यह कविता स्पष्ट संकेत देती है। जनसंख्या के दबाव के कारण भवन-निर्माण कृषि योग्य भूमि पर किया जा रह है। साथ ही आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होते हुए कारखानों और फैक्ट्रियों की स्थापना की जा रही है। वह भी कृषि भूमि पर ही हो रहा है।

गुप्त जी अपनी कविता 'एक खेत' में कहते हैं कि किसान बैल न होने की स्थिति में स्वयं ही परिश्रम करके खेत जोतते हैं। फसल को लहलहाते देख आनंद में नाचते और गाते हैं। जिन लोगों के पास खेत नहीं हैं , उनका जीवन व्यर्थ ही है। वे ही धन्य हैं, जिनके पास खेती है:

बैल न होते हम तो होते
श्रम-जी सींच जोतते बोते
डगते आशा के-से अंकुर रहता फिर क्यों रक्त श्वेत
बांध मचान रखते गाते
हम कितना आनंद मनाते
जग में हरा खेत है जिनका भरा उन्हीं का है निकेत।13

खेत होने से जो जीवन शैली ग्राम्य लोक की होती है उसका भी सुंदर चित्रण गुप्त जी ने किया है:

आती फिर गोमाता मोटी
बच्चे खाते माखन रोटी
देती उन्हें गर्व से गृहिणी घर के तिल गुड़ के समेत।14

धरती को यूं ही स्वर्ग से महान् नहीं कहा जाता। वह यथार्थ में हमारे जीवन को संवारने वाली और संपूर्ण जीवन को सुख देने वाली मां है। वह स्वयं कष्ट उठा लेती है, लेकिन अपनी संतान को दुःख में नहीं देख सकती। कृषक अपनी उपज को यूं ही सोना नहीं कहते यह भूमि सोना उगलने वाली है।

मोती बरसाती तब मिट्टी मणि-कणिकाएं धूल रेत।15

और

दुर्लभ हुई धूल भी हमको व्यर्थ कल्पना चित्त चेत।16

वर्तमान परिस्थितियों पर उक्त पंक्ति पूर्णतः प्रासंगिक है। आज हमें कृषि भूमि से मिट्टी कम और कारखाने से निकलने वाला धुआं अधिक दिखाई देता है। कवि इस पंक्ति के माध्यम से मानव को जाग्रत और सचेत करते हैं कि वह व्यर्थ के कल्पना लोक में भौतिक सुख-सुविधाओं की चकाचौंध में न बहे अन्यथा अपना अस्तित्व खो देगा।

ग्रामीण अंचल और किसान को माध्यम बनाकर गुप्त जी ने किसान कविता की रचना की है। जैसे सेनापति, पद्माकर और गुप्त जी ने स्वयं भी विभिन्न ऋतुओं के माध्यम से संयोग-वियोग श्रृंगार रस का चित्रण किया है , वैसे ही गुप्त जी ने किसान की यथार्थ स्थिति का चित्रण षट्ऋतु में अभिव्यक्त किया है।

किसानों को अपनी उपज का वास्तविक लाभ कहां मिलता है वह तो उपज हेतु जो खर्च करता है उसीमें सब खप जाता है। किसान उपज अच्छी होने के बाद भी पूर्ववत दयनीय स्थिति में जीवन बिताने को विवश रहता है:

हो जाए अच्छी भी फसल पर लाभ कृषकों को कहां
खाते, खवाई, बीज, ऋण से हैं रंगे रक्खे जहां।
आता महाजन के यहां वह अन्न सारा अंत में
अधपेट खाकर इन्हें कांपना हेमंत में।17

जो सारे जगत का पेट भरता है, वही भूखा रहता है। ऐसी स्थिति में रामधारी सिंह दिनकर ने कुरुक्षेत्र में लिखा है:

जिसने श्रम-जल दिया, उसे पीछे मत रह जाने दो
विजित प्रकृति से सबसे पहले उसको सुख पाने दो।18

ये पंक्तियां आज भी उनती ही प्रासंगिक हैं जितनी उस समय सार्थक थीं। पितामह इसी संदर्भ में यह भी कहते हैं:

जो कुछ नस्ल प्रकृति में है वह मनुज मात्र का धन है।
धर्म-राज! डसके कण-कण का अधिकारी जन-जन है।।
सहज सुरक्षित रहता यह अधिकार कहीं मानव का।
आज रूप कुछ दूसरा ही होता इस भव का।।19

किसान कड़ाके की ठंड में खेत में सिंचाई करता है। सूर्य की आग बरसाती किरणों के बीच हल चलाता है, जबकि धरती तवे-सी तप्त रहती है। बारिश हो जाने के बाद खेत में बुवाई करता है। आंधी का सामना करते हुए कृषि कार्य करता रहता है। अपने कृषि-कर्म में लीन वह संसार के घटनाक्रम से अनभिज्ञ अपने ही संसार में निरंतर लगा रहता है:

सम्प्रति कहां क्या हो रहा है कुछ न उनको ज्ञान है
है वायु कैसी चल रही इसका न कुछ भी ध्यान है
मानो भुवन से भिन्न उनका दूसरा ही लोक है
शशि-सूर्य हैं फिर भी कहीं उनमें नहीं आलोक है।20

कवि गुप्त जी की यह अंतिम पंक्ति सीधे मर्म का स्पर्श करती है। जो सूर्य सारे जगत को प्रकाशित करता है और जिस चंद्रमा से सारी दुनिया शीतलता का अनुभव करती है , वे भी उसके जीवन को आलोकित और शीतल नहीं कर पाते। उसके जीवन का अंधकार जैसे शाश्वत ही हो।

इसी प्रकार की भावाभिव्यक्ति किसान के संदर्भ में रामधारी सिंह दिनकर ने भी की है। किसान प्रत्येक मौसम में अपने कर्म में तल्लीन रहता है:

जेठ हो कि हो पूस हमारे कृषकों को आराम नहीं है
छूटे कभी संग बैलों का ऐसा कोई ग्राम नहीं है।
मुख में जीभ शक्ति भुजा में जीवन में सुख का नाम नहीं है
वसन कहां ? सूखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं है।21

किसान की तो दयनीय स्थिति है ही और वह तो अपने दु:ख से युक्त जीवन को ढो लेता है , लेकिन जो उसका नन्हा शिशु है, वह अपने दु:ख को कैसे छिपाये, उसने तो यह सीखा ही नहीं है:

पर शिशु का क्या सीख न पाया अभी जो आंसू पीना
चूस-चूस सूख स्तन मां का सो जाता रो-विलप नगीना।22

मां अपने नन्हें शिशु की इस दशा पर तड़प उठती है। मां की इस तड़प को कवि दिनकर जी ने अत्यंत मर्मस्पर्शी रूप में चित्रित किया है। वह

अपने शिशु के लिए संसार की हर बाधा से लड़ने को तत्पर हो जाती है:

हटो व्योम के मेघ पंथ से स्वर्ग लूटने हम आते हैं
दूध-दूध हे वत्स! तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं।23

इसी प्रकार केदारनाथ अग्रवाल ने किसान को जड़-मूल से चूसने वाले महाजन का चित्रण किया है। व्यंग्यात्मक शैली में रचित कविता 'गांव का महाजन' निश्चित रूप से किसान की दयनीय दशा का कारण है:

वह समाज के त्रस्त क्षेत्र का मस्त महाजन
गौरव के गोबर-गणेश-सा मारे आसन।24

कवि ने उसकी वेशभूषा पर चुटकी लेते हुए कहा है:

नारिकेल से सिर पर बांधे धर्म मुरैठा
ग्राम बधुटी की गौरी-गादी पर बैठा।25

ग्रामीणों को वह कैसे अपने चंगुल में फंसाता है इस ओर भी कवि ने संकेत किया है:

नाग मुखी पैतृक संपत्ति की थैली खोले
जीभ निकाले बात बनाता करुणा घोले।
ब्याज स्तुति से बांट रहा है रुपया पैसा
सदियों पहले से होता आया है ऐसा।26

महाजन जितनी करुणा से किसानों को पैसा देता है, उतनी ही निष्ठुरता से वह वसूल भी करता है:

सूंड लपेटे हैं कर्जे की ग्रामीणों को
मुक्ति अभी तक नहीं मिली है इन दीनों को।
इन दीनों का ऋण रोकड़-कांड बड़ा है,
अब भी किन्तु अछूता शोषण-कांड पड़ा है।27

जो किसान रात-दिन हर मौसम में तकलीफ उठाता है, उसे दो वक्त का भोजन भी नसीब नहीं होता। जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनाज उपजाता है, कैसी विडंबना है कि वही खाने को तरसता है। उसके द्वारा लिया जाने वाला ऋण जमींदारी प्रथा में उसके प्राण जाने के बाद भी अनवरत चलता रहता था।

निष्कर्ष

इस प्रकार साहित्य के आरंभ से लेकर आधुनिक काल तक काव्य में ग्रामीण जीवन का चित्रण समाया है। साथ ही भारत देश के अन्नदूत की वर्तमान में दयनीय दशा ने सरकार को भी चिंतन करने पर विवश किया है। इसीलिए 2016 के केंद्रीय बजट में किसानों के लिए 36 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। वर्तमान में बढ़ती जनसंख्या और विकास के नाम पर कृषि भूमि का कम होना चिंता और चिंतन का विषय है। ग्रामीण जीवन के सुख-दुःख को हिन्दी के साहित्यकारों ने यथार्थ के धरातल पर अभिव्यक्त किया है। उनकी संवेदनात्मक दृष्टि से ग्रामीण जीवन का कोई भी चित्र छूटने नहीं पाया है। उनके साहित्य में ग्रामीण जीवन में भविष्य में उपस्थित होने वाली चुनौतियों और संभावनाओं को अभिव्यक्त किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 संस्कृत पथदर्शिका , नवनीत पब्लिकेशन्स, भोपाल, पृष्ठ 66

2 मकरंद, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र , भोपाल, पृष्ठ 2

3 वही

4 स्वाति, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र , भोपाल, पृष्ठ 169

5 वही

6 साहित्य भारती , मध्यप्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम , पृष्ठ 56

7 भ्रमरगीत सार, सूरदास, संपादक - आचार्य रामचंद्र शुक्ल, कमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 112

8 वही

9 वही, पृष्ठ 75

शब्द–ब्रह्म

E ISSN 2320 – 0871

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

17 अगस्त 2016

पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

10 साहित्य भारती, मध्यप्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम, पृष्ठ 140

11 पचास कविताएं , मैथिलीशरण गुप्त, संपादक - अयोध्याप्रसाद गुप्त कुमुद वाणी प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ 71

12 वही

13 वही

14 पचास कविताएं , मैथिलीशरण गुप्त, संपादक - अयोध्याप्रसाद गुप्त कुमुद वाणी प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ 71

15 पचास कविताएं , मैथिलीशरण गुप्त, संपादक - अयोध्याप्रसाद गुप्त कुमुद वाणी प्रकाशन दिल्ली पृष्ठ 71

16 पचास कविताएं मैथिलीशरण गुप्त संपादक - अयोध्याप्रसाद गुप्त कुमुद वाणी प्रकाशन दिल्ली पृष्ठ 72

17 किसान मैथिलीशरण गुप्त कविता कोश डाट कॉम

18 साहित्य भारती, मध्यप्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम, पृष्ठ 71

19 वही

20 किसान, मैथिलीशरण गुप्त, कविता कोश डाट कॉम

21 हमारे कृषक रामधारी सिंह दिनकर कविता कोश डाट कॉम

22 वही

23 वही

24 गांव का महाजन, केदारनाथ अग्रवाल, कविता कोश डाट कॉम

25 वही

26 वही

27 वही